डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 19.08.2020

व्याख्यान संख्या-39 (कुल सं. 75)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

बेसरि-मोती-दुति-झलक परी अधर पर आय।

चूनो होय न चतुर तिय क्यों पट पोछ्यों जाय।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

प्रस्तुत प्रसंग नायिका के शरीर में नवयौवनागमन से बढ़ने वाली

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

स्वच्छ कांति तथा उसके प्रति नायिका के अनजानेपन के कारण परिहासात्मक रूप में सौन्दर्य वर्णन का है। नायिका के शरीर में नवयौवन के आगमन से ऐसी कांति तथा स्वच्छता बढ़ गयी है कि उसके होठों पर बेसर के मोती की सफेद झलक पड़ी है जिसको वह दर्पण में देखकर अनजानेपन के कारण चूना लगा हुआ समझकर कपड़े से पोंछना चाहती है। इस पर सखी उससे परिहास कर रही है।

सखी के शब्दों में कवि कहते हैं कि बेसर में गुँथे हुए मोतियों की चमक की सफेद आभा तेरे होठों पर पड़ी हुई है। हे चतुर नारी ! यह चूना नहीं है, अतः इसे वस्त्र से कैसे पोंछा जा सकता है ?

बेसर नाक में पहनने का एक आभूषण होता है जिसमें बहुत से मोती गुँथे होते हैं। नायिका के होंठ स्वच्छ हैं जिसपर मोती की सफेद आभा पड़ रही है। नायिका इससे अनजान है, अतः होठों पर सफेदी देख कर उसे लगता है कि यहाँ चूना लगा हुआ रह गया है जिसे वह कपड़े से पोंछ रही है; परंतु वह पोंछने से हटता नहीं है। इसी पर सखी उससे परिहास कर रही है। यहाँ परिहास के माध्यम से नायिका के उत्तम सौन्दर्य का वर्णन भी हो जाता है। यह ध्यातव्य है कि इस दोहे में नायिका को चतुर कहा गया है, परंतु यहाँ चतुर शब्द का प्रयोग वस्तुतः व्यंग्य के रूप में है, जिसका तात्पर्य अल्हड़ अथवा भोली-भाली

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

है।

प्रस्तुत दोहे में एक पदार्थ में किसी अन्य पदार्थ का भ्रम हो जाने तथा उसका निवारण सत्य बात कहकर किये जाने के कारण भ्रान्त्यपह्नुति अलंकार है।